ग्लोबल वार्मिंग

Dr.sandeep yadav

ग्लोबल वार्मिंग पूरे विश्व के लिये एक बड़ा पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दा है जिसे हर एक को जानना चाहिये खास तौर पर हमारे बच्चों को क्योंकि वो हमारा भविष्य है आज भी हम ग्लोबल वार्मिंग की समस्या देख तो रहे है पर, उसे नजर अंदाज कर रहे है| जबकि आने वाले कुछ वर्षो मे ग्लोबल वार्मिंग का असर और भी ज्यादा दिखने लगेगा|

ग्लोबल वार्मिंग की परिभाषा:– धरती के वातावरण में तापमान के लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ:– पृथ्वी के निकट स्थित हवाई और महासागर की औसत तापमान में बीसवीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है पृथ्वी की सतह के निकट विश्व की वायु के औसत तापमान में 2500 वर्षों के दौरान 0.74 प्लस माइनस 0.8 डिग्री सेल्सियस(1. 33 प्लस माइनस 0. 32 डिग्री एफ)

ग्लोबल वार्मिंग के कारण:

ग्लोबल वार्मिंग के बहुत सारे कारण है, इसका मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैस है जो कुछ प्राकृतिक प्रक्रियाओं से तो कुछ इंसानों की पैदा की हुई है। जनसंख्या विस्फोट, अर्थव्यवस्था और ऊर्जा के इस्तेमाल की वजह से 20वीं सदी में ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ते देखा गया है। वातावरण में कई सारे ग्रीनहाउस गैसों के निकलने का कारण औद्योगिक क्रियाएँ है, क्योंकि लगभग हर जरुरत को

पूरा करने के लिये आधुनिक दुनिया में औद्योगिकीकरण की जरुरत है।

पिछले कुछ वर्षों में कॉर्बनडाई ऑक्साइड(CO2) और सलफरडाई ऑक्साइड (SO2) 10 गुना से बढ़ा है। ऑक्सीकरण चक्रण और प्रकाश संश्लेषण सहित प्राकृतिक और औद्योगिक प्रक्रियाओं के अनुसार कॉर्बनडाई ऑक्साइड का निकलना बदलता रहता है। कार्बनिक समानों के सड़न से वातावरण में मिथेन नाम का ग्रीनहाउस गैस भी निकलता है। दूसरे ग्रीनहाउस गैस है-नाइट्रोजन का ऑक्साइड, हैलो कार्बन्स, CFCs क्लोरिन और ब्रोमाईन कम्पाउंड आदि। ये सभी वातावरण में एक साथ मिल जाते है और वातावरण के रेडियोएक्टिव संतुलन को बिगाड़ते है। उनके पास गर्म विकीकरण को सोखने की क्षमता है जिससे धरती की सतह गर्म होने लगती है।

अंर्टाटिका में ओजोन परत में कमी आना भी ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण है। CFCs गैस के बढ़ने से ओजोन परत में कमी आ रही है। ये ग्लोबल वार्मिंग का मानव जनित कारण है। ओजोन परत का काम धरती को नुकसान दायक किरणों से बचाना है। जबकि, धरती के सतह की ग्लोबल वार्मिंग बढ़ना इस बात का संकेत है कि ओजोन परत में क्षरण हो रहा है। हानिकारक अल्ट्रा वॉइलेट सूरज की किरणें जीवमंडल में प्रवेश कर जाती है और ग्रीनहाउस गैसों के द्वारा उसे सोख लिया जाता है जिससे अंततः ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ौतरी होती है। अगर आँकड़ों पर नजर डाले तो ऐसा आकलन किया गया है कि अंर्टाटिका (25 मिलियन किलोमीटर) की छेद का दोगुना ओजोन परत में छेद है। सर्दी और गर्मी में ओजोन क्षरण का कोई खास चलन नहीं है।

मानव द्वारा निर्मित ग्लोबल वार्मिंग के अन्य कारण:

(1) वनों की कटाई।

(2) औधोगिकरण।

(3) शहरीकरण।

(4) पेड़ों का काटना।

(5) मानव के विभिन्न क्रियाएं।

(6) हानिकारक योगीको में वृद्धि।

(7) रासायनिक उर्वरकों का उपयोग।

ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण विकसित देश:

ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण विकसित देश है इसका रवैया लगातार व्यवधान उत्पन्न करता है संयुक्त राज्य अमेरिका और बहुत से अन्य विकसित देश इस समस्या के लिए ज्यादा जिम्मेदार है क्योंकि विकासशील देशों की अपेक्षा उनके देश की कार्बन उत्सर्जन की प्रति दर 10 गुना अधिक है लेकिन अपना और औद्योगिक प्रकृति बनाए रखने के लिए कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने की इच्छुक नहीं है, वहीं दूसरी ओर भारत ,चीन ,जापान जैसे विकासशील देशों का मानना है कि वह भी विकास की प्रक्रिया में है ,इसलिए वह कार्बन उत्सर्जन को कम करने का रास्ता नहीं अपना सकते हैं इसलिए विकसित देशों को भी थोड़ा सामंजस्य बनाकर अपने पृथ्वी की सुरक्षा समझ कर कार्य करना चाहिए।

ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव:

ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ने के साधनों के कारण कुछ वर्षों में इसका प्रभाव बिल्कुल स्पष्ट हो चुका है। अमेरिका के भूगर्भीय सर्वेक्षणों के अनुसार, मोंटाना ग्लेशियर राष्ट्रीय पार्क में 150 ग्लेशियर हुआ करते थे लेकिन इसके प्रभाव की वजह से अब सिर्फ 25 ही बचे हैं। बड़े जलवायु परिवर्तन से तूफान अब और खतरनाक और शक्तिशाली होता जा रहा है। तापमान अंतर से ऊर्जा लेकर प्राकृतिक

तूफान बहुत ज्यादा शक्तिशाली हो जा रहे है। 1895 के बाद से साल 2012 को सबसे गर्म साल के रुप में दर्ज किया गया है और साल 2003 के साथ 2013 को 1880 के बाद से सबसे गर्म साल के रुप में दर्ज किया गया।

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से बहुत सारे जलवायु परिवर्तन हुए है जैसे गर्मी के मौसम में बढ़ौतरी, ठंडी के मौसम में कमी,तापमान में वृद्धि, वायु-चक्रण के रुप में बदलाव, जेट स्ट्रीम, बिन मौसम बरसात, बर्फ की चोटियों का पिघलना, ओजोन परत में क्षरण, भयंकर तूफान, चक्रवात, बाढ़, सूखा आदि।

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान:

सरकारी एजेंसियों, व्यापारिक नेतृत्व, निजी क्षेत्रों और एनजीओ आदि के द्वारा, कई सारे जागरुकता अभियान और कार्यक्रम चलाये और लागू किये जा रहे है। ग्लोबल वार्मिंग के द्वारा कुछ ऐसे नुकसान है जिनकी भरपाई असंभव है(बर्फ की चोटियों का पिघलना)। हमें अब पीछे नहीं हटना चाहिए और ग्लोबल वार्मिंग के मानव जनित कारकों को कम करने के द्वारा हर एक को इसके प्रभाव को घटाने के लिये अपना बेहतर प्रयास करना चाहिए। हमें वातावरण से ग्रीनहाउस गैसों का कम से कम उत्सर्जन करना चाहिये और उन जलवायु परिवर्तनों को अपनाना चाहिये जो वर्षों से होते आ रहे है। बिजली की ऊर्जा के बजाये शुद्ध और साफ ऊर्जा के इस्तेमाल की कोशिश करनी चाहिये अथवा सौर, वायु और जियोथर्मल से उत्पन्न ऊर्जा का इस्तेमाल करना चाहिये। तेल जलाने और कोयले के इस्तेमाल, परिवहन के साधनों, और बिजली के सामानों के स्तर को घटाने से ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को घटाया जा सकता है।

Reference:-

https://hindi-essay.com › ग्लोबल-...

ग्लोबल वार्मिंग पर निबंध, Global warming - Hindi Essay

https://hindi.indiawaterportal.org › n...

ग्लोबल वार्मिंग: कारण और उपाय ... - Hindi Water Portal

businessbharat.com › essay-global-...

Best Essay on Global Warming in Hindi ग्लोबल ... - BusinessBharat

https://www.hindikiduniya.com › ...

ग्लोबल वार्मिंग पर निबंध – Global Warming Essay in Hindi

https://www.deepawali.co.in › g...

ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रभाव व समाधान ... - Deepawali

https://www.hindimeaning.com › gl...

ग्लोबल वार्मिंग पर निबंध-Global Warming Essay In Hindi

https://www.hindivarta.com › global...

Global Warming Essay in Hindi ग्लोबल वार्मिंग पर निबंध